e-ISSN No. 3107/6564

भाग 01 अंक 02 / जुलाई 2025

e-ISSN No. 3107/6564

NATIONAL AGRICULTURAL STUDENTS ORGANIZATION

हिंदी मासिक

कृषि पत्रिका

(कृषि छात्रों, किसानों एवं कृषि वैज्ञानिक हेतु समर्पित)

Contact to us - E-mail: editorinchief@naso.org.in / website: www.naso.org.in

e-ISSN No. 3107/6564

डॉ. भाष्कर दुबे
मुख्य संपादक
ediotorinchief@naso.org.in

डॉ अनुराग रजनीकांत तायडे
संपादक
editor@naso.org.in
सहायक प्रोफेसर - कीट विज्ञान विभाग, शुआट्स, प्रयागराज, उत्तर प्रदेश

डॉ. अमित कुमार
संपादक
editor@naso.org.in
सहायक प्रोफेसर - कृषि अर्थशास्त्र विभाग, SHUATS, प्रयागराज, उत्तर प्रदेश

अनुग्रह साक्षी
संपादक
editor@naso.org.in
सहायक प्रोफेसर - कृषि विस्तार एवं संचार विभाग, शुआट्स, प्रयागराज, उत्तर प्रदेश

निखिल तिवारी श्रीदत्त
सह-संपादक
coeditor@naso.org.in
टीचिंग एसोसिएट - कृषि विस्तार एवं संचार विभाग, शुआट्स, प्रयागराज, उत्तर प्रदेश

शशांक सिंह
सह-संपादक
coeditor@naso.org.in
टीचिंग एसोसिएट - शस्य विज्ञान विभाग, शुआट्स, प्रयागराज, उत्तर प्रदेश

प्रकाशक –

डॉ. भाष्कर दुबे

पत्रिका का प्रकार - हिंदी, मासिक, कृषि पत्रिका

पंजीकृत पता - अतरौरा मीरपुर, सोनपुरा, प्रतापगढ़ (उ.प्र.) 230124

कार्यालय - गंगोत्री नगर, SHUATS कृषि विश्वविद्यालय, नैनी, प्रयागराज, उत्तर प्रदेश 211007

Website – www.naso.org.in

E-mail – editorinchief@naso.org.in

Contact – 9936902749 / 7068708058

e-ISSN No. 3107/6564

पशुओं में लंपी रोग

(Lumpy Skin Disease)

गायों में फैलता एक खतरनाक विषाणुजन्य रोग

डॉ० अनुज कुमार शुक्ला

पशुपालन विभाग, शुआट्स, प्रयागराज

प्रस्तावना-

हाल के वर्षों में मवेशियों में "लंपी स्किन डिज़ीज़" (Lumpy Skin Disease – LSD) ने पूरे भारत में चिंता का विषय बना दिया है। यह रोग गायों में तेजी से फैलने वाला **संक्रामक विषाणुजन्य रोग** है, जो पशुपालकों की **आर्थिक हानि** और **दूध उत्पादन में कमी** का मुख्य कारण बन रहा है।

रोग का कारण

लंपी रोग *Capripoxvirus* नामक वायरस से होता है, जो **Poxviridae परिवार** का सदस्य है।

यह वायरस मुख्यतः मच्छरों,मक्खियों,किलनियों (ticks), और अन्य रक्त चूसने वाले कीटों के माध्यम से एक पशु से दूसरे पशु में फैलता है।

मुख्य लक्षण (Symptoms)

क्रमांक	लक्षण का विवरण
1-	शरीर पर गोल आकार के कठोर फोड़े या गांठें बनना
2-	तेज बुखार और सुस्ती
3-	आँख, नाक एवं मुँह से स्राव निकलना
4-	त्वचा पर सूजन, बाल झड़ना, घाव बनना
5-	दूध उत्पादन में भारी कमी
6-	गर्भवती पशुओं में गर्भपात या बाँझपन की स्थिति

यह रोग ज्यादातर गायों में पाया जाता है, जबकि भैंसों में इसके मामले अपेक्षाकृत कम देखे जाते हैं।

संक्रमण का प्रसार (Transmission)

यह रोग सीधे संक्रमित पशु के संपर्क, दूषित चारा, पानी, बाड़े या उपकरणों के माध्यम से फैल सकता है।

मानसून और बरसात के मौसम में मच्छरों व मक्खियों की संख्या बढ़ने से संक्रमण की संभावना अधिक होती है।

रोग की पहचान (Diagnosis)

- लंपी रोग की पुष्टि निम्न तरीकों से की जा सकती है — *प्रयोगशाला परीक्षण* (PCR, ELISA आदि) द्वारा रक्त या त्वचा के नमूनों से।
- *प्राथमिक पहचान* लक्षणों के आधार पर पशु चिकित्सक द्वारा।

जानिए कैसे करें बचाव (Prevention & Control)

1. टीकाकरण (Vaccination)

- *Goat Pox Vaccine* अथवा *Lumpy ProVac* का उपयोग किया जाता है।
- सभी गाय-बछड़ों का टीकाकरण समय पर कराना अत्यंत आवश्यक है।

2. संक्रमित पशु को अलग रखें

- बीमार पशु को स्वस्थ झुंड से दूर रखें।

3. कीट नियंत्रण

- बाड़े में मच्छर, मक्खी और किलनी के नाश के लिए नियमित रूप से कीटनाशक का छिड़काव करें।

4. स्वच्छता का ध्यान रखें

- पशुशाला, पानी के बर्तन और चारे की जगह को प्रतिदिन साफ करें।

5. संतुलित आहार

- रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाने हेतु खनिज मिश्रण और हरा चारा दें।

6. पशु चिकित्सक की सलाह लें

- किसी भी लक्षण के दिखने पर तुरंत पशु चिकित्सक से संपर्क करें।

आर्थिक प्रभाव

लंपी रोग से —

- दूध उत्पादन में 30–50% तक गिरावट,
- दुग्ध उत्पादकों की आमदनी पर असर,
- प्रजनन दर में कमी,
- और पशुधन की कीमत में भारी गिरावट होती है।

e-ISSN No. 3107/6564

यह रोग धीरे-धीरे खत्म होता है लेकिन इसके दुष्प्रभाव लंबे समय तक बने रहते हैं।

निष्कर्ष

- लंपी स्किन डिज़ीज़ एक गंभीर पशुजन्य रोग है, परंतु **सतर्कता, स्वच्छता और समय पर उपचार** से इसके प्रभाव को काफी हद तक कम किया जा सकता है। हर पशुपालक को चाहिए कि वह सरकारी टीकाकरण अभियान में सहयोग करे और अपने पशुओं की सुरक्षा सुनिश्चित करे।